कार्यालय – प्राचार्य,
राजकीय महाविद्यालय चिन्यालीसौड़ उत्तरकाशी(उत्तराखंड) 249196
ईमेल : gdcchinyalisaur@yahoon.in वेबसाइट : www.rmcuk.in फोन 01371 237154

# FIELD PROJECT BY B.A.FINAL YEAR STUDENTS OF GEOGRAPHY DEPARTMENT

This is to certify that the Field project on **"Geographical Studies and Analysis of Harsil Valley"** was completed between **23/04/2022 to 22/05/2022** under my supervision by the following students:

| S.No. | Name of the Student |
|---|---|
| 01 | Ambika |
| 02 | Sadhna |
| 03 | Monika Panwar |
| 04 | Shweta |
| 05 | Manisha |
| 06 | Shivani |
| 07 | Amita |
| 08 | Ganga |
| 09 | Sangeeta |
| 10 | Neha |
| 11 | Deepika |
| 12 | Chandani |
| 13 | Rinky |
| 14 | Bharti |
| 15 | Reetika |
| 16 | Ashika |
| 17 | Pushpa |
| 18 | Anjali |
| 19 | Ashika |
| 20 | Preeti |
| 21 | Nanda |
| 22 | Ayesha |
| 23 | Ranjana |
| 24 | Nitesh Kumar |
| 25 | Yogeshwari |
| 26 | Nagina |
| 27 | Vijaylaxmi |
| 28 | Pravesh Nautiyal |
| 29 | Keshav Bhatt |
| 30 | Payal |
| 31 | Km Neetu |
| 32 | Vinita |
| 33 | Deeksha |

| | |
|---|---|
| 34 | Sunita |
| 35 | Sonam |
| 36 | Anjali |

Mr. Deepak Dharmsaktu
Department of Geography

Department of Geography
Rajkiya Mahavidyalaya
Chinyalisaur, Uttarkashi

# राजकीय महाविद्यालय चिन्यालीसौड़

( उत्तरकाशी ) सत्र-2022-23

# हर्षिल घाटी का भौगोलिक अध्ययन व विवेचना

Submitted by

Name आयशा

Class B.A III Year

Roll No.

Subject भूगोल

Submitted to

Dr. Deepak Singh

# :– अध्ययन का मुख्य उद्देश्य :–

किसी भी सर्वेक्षण शोध को करने से पूर्व उसका उद्देश्य निर्धारित कर लेना आवश्यक होता है। क्योंकि इससे अध्ययन की एक श्रृंखला बनी रहती है । और उद्देश्य को प्राप्त करने में आसानी रहती है । हमारे अध्ययन का उद्देश्य सर्वेक्षित ग्रामों की कुल जनसंख्या का लिंगानुपात साक्षरता एवं प्रवास का विश्लेषण करना है , तथा प्रवास से इस क्षेत्र का सामाजिक आर्थिक जीवन इस प्रकार प्रभावित होता है । अध्ययन से यह देखने को मिला की हर्षिल घाटी में जिन ग्रामों में सिंचाई के साधन एवं आवागमन के साधनों की उपलब्धता थी उन ग्रामों में प्रवास कम देखने को मिलता है । प्रवास एक गतिशील किया है, ग्रामों के लोग अपने आवश्यकता अनुसार ग्रामों से बाहर आते रहते है ।

# —:आभार :—

प्रस्तुत रिपोर्ट हमारे भूगोल विषय के Sec-Skill Enhancement Course Field Techniques Report and Survey Based Project के अन्तर्गत तैयार की गई है। हमने इसके अर्न्तगत उत्तरकाशी जिले के ग्रामों का सर्वेक्षण किया इसमें हर्षिल घाटी के ग्रामों का सर्वेक्षण किया है। यह सर्वेक्षण कार्य हमने भूगोल विभाग राजकीय महाविद्यालय चिन्यालीसौड के डा0 दीपक सिंह (असिस्टेन्ट प्रोपेसर भूगोल) के निर्देशक में पूर्ण किया इन्होने हमें सर्वेक्षण क्षेत्र एवं विषय के चुनाव एवं प्रश्नावली तैयार करने में विशेष सहयोग प्रदान किया। हम इनके महत्वपूतर्ण योगदान हेतु एवं हमारे सहपाठी का आभार व्यक्त करते है। जिनके महत्वपूर्ण योगदान से हमारा यह कार्य सम्पन्न हो सका।

# चिन्याली सौड से हर्षिल भ्रमण

हर्षिल , भारत के उत्तराखण्ड राज्य के गढ़वाल के उत्तरकाशी जिले में उत्तरकाशी-गंगोत्री मार्ग के मध्य स्थित एक ग्राम और कैण्ट क्षेत्र है। यह स्थान गंगोत्री को जाने वाले मार्ग पर भागीरथी नदी के किनारे स्थित है। हरसिल समुद्र तल से ७,८६० फुट की ऊंचाई पर स्थित है। यहां से ३० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान जो १,५५३ वर्ग किमी के क्षेत्र में फैला है । सम्पादित कौशल किशोर मौनी बाबा आश्रम गंगोत्री हर्षिल मे भगवान श्री हरि की लेटि हुयी शिला है जोकि हर्शिल मे लक्ष्मीनारायण मन्दिर के निचे भागीरथी गंगा नदी के किनारे पर स्थित है इस लिए हर्शिल नाम पडा है

हर्षिल

— गांव —

गंगोत्री के नीचे गंगा, हर्षिल में

## प्राकृतिक सौंदर्य

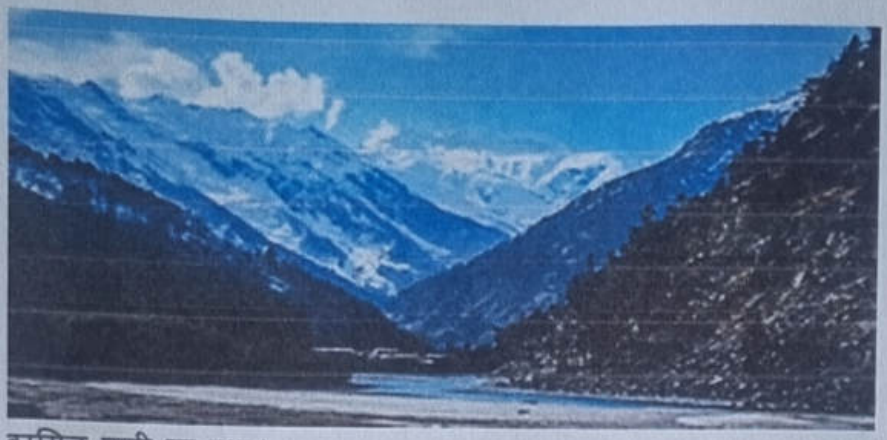

हरसिल घाटी का दृश्य।

हर्षिल उत्तरकाशी से ७३ किलोमीटर आगे और गंगोत्री से २५ किलोमीटर पीछे तक सघन हरियाली से आच्छादित है। गढ़वाल के अधिकांश सौन्दर्य स्थल दुर्गम पर्वतों में स्थित हैं जहां पहुंचना बहुत कठिन होता है। यही कारण है कि प्रकृति प्रेमी पर्यटक इन स्थानों पर पहुंच नहीं पाते हैं। लेकिन ऐसे भी अनेक पर्यटक स्थल हैं जहां सभी प्राकृतिक विषमता और दुरुहता समाप्त हो जाती है। वहां तक पहुंचना सहज और सुगम होता है। यही कारण है कि इन सुविधापूर्ण प्राकृतिक स्थलों पर अधिक पर्यटक पहुंचते हैं। प्रकृति की एक ऐसी ही एक सुंदर उपत्यका है, हरसिल।

यहां का प्राकृतिक सौंदर्य देखते ही बनता है। घाटी के सीने पर भागीरथी का शान्त और अविरल प्रवाह हर किसी को आनन्दित करता है। पूरी घाटी में नदी-नालों और जल प्रपातों की भरमार है। हर कहीं दूधिया जल धाराएं इस घाटी का मौन तोडने में डटी हैं। नदी झरनों के सौंदर्य के साथ-साथ इस घाटी के सघन देवदार के वन मनमोहक हैं। जहां तक दृष्टि जाती है वृक्ष हि वृक्ष दिखाई देते हैं। यहां पहुंचकर पर्यटक इन वृक्षों की छांव तले अपनी थकान को मिटाता है। वनों से थोडा ऊपर दृष्टि पडते ही आंखें खुली की खुली रह जाती है। हिमाच्छादित पर्वतों का आकर्षण तो देखते ही बनता है। ढलानों पर फैले हिमनद भी देखने योग्य है।

## भूगोल

दिल्ली-हरिद्वार-हरसिल रिज, अरावली पर्वत श्रृंखला के उत्तरी फैलाव का भूमिगत रिज है, जिसका फैलाव उत्तर उत्तरपूर्व-दक्षिण दक्षिण पश्चिम तक है और जिसका विस्तार अजमेर और जयपुर से होता हुआ आगे अंबा माता-देरि से दिल्ली तक है।

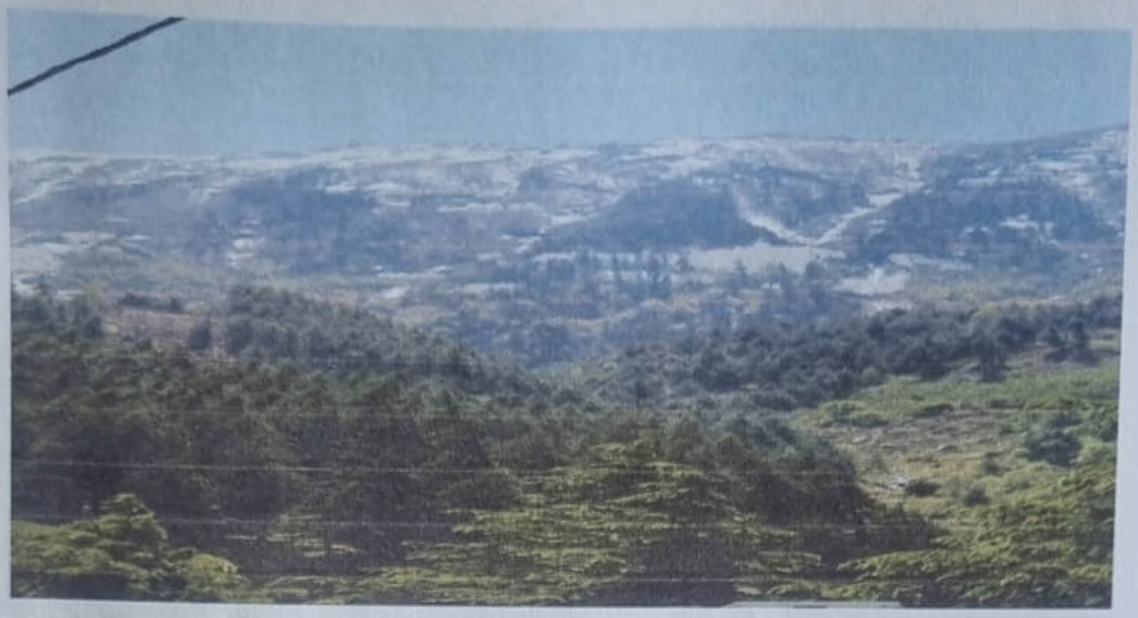

इस घाटी से इतिहास के रोचक पहलू भी जुडे हैं। एक अंग्रेज़ थे, फेडरिक विल्सन जो ईस्ट इंडिया कंपनी में कर्मचारी थे। वह थे तो इंग्लैंड वासी लेकिन एक बार जब वह मसूरी घूमने आए तो हरसिल की घाटियों में पहुंच गए। उन्हें यह स्थान इतना भाया कि उन्होंने सरकारी नौकरी तक छोड़ दी और यहीं बसने का मन बना लिया। स्थानीय लोगों के साथ वह शीघ्र ही घुल-मिल गए और गढ़वाली बोली भी सीख ली। उन्होंने अपने रहने के लिए यहां एक बंगला भी बनाया। निकट के मुखबा ग्राम कि एक लड़की से उन्होंने विवाह भी किया। विल्सन ने यहां पर इंग्लैंड से सेब के पौधे मंगावाकर लगाए जो खूब फले-फूले। आज भी यहां सेब की एक प्रजाति विल्सन के नाम से प्रसिद्ध है।

Seen

# हरसिल का वर्णन | Harsil Valley Uttarakhand |

हरसिल, गंगोत्री मार्ग पर सड़क से लगा हुआ है। भागीरथी नदी के दोनों ओर बसा हुआ यह गांव भारतीय सेना का बेस कैम्प भी है। हरसिल में दो छोटी नदियां जालंधरी और ककोड़ा नदी भी हैं जो यहीं भागीरथी नदी में मिल जाती हैं। प्रमुख पर्यटक स्थान होने की वजह से यहाँ काफी सारे होटल और गेस्ट हाउस उपलब्ध हैं।

हरसिल यहां की राजमा दाल, सेब और आलू के लिए जाना जाता है। हरसिल सेब उत्पादन में उत्तराखंड का एक प्रमुख स्थान है। 19 वीं शताब्दी में ब्रिटिशर विलसन ने यहाँ पहले सेब के पौधे का पौधरोपण किया था। हर साल यहाँ सेब की प्रतियोगिता और प्रदर्शनी भी लगती है जिसमे काफी दूर दूर से लोग अपने बगीचे के सबसे अच्छे सेब लेकर आते हैं। प्रतियोगिता में सबसे अच्छे सेब को पुरुस्कृत किया जाता है।

# राजकीय महाविद्यालय चिन्यालीसौड़

( उत्तरकाशी ) सत्र-2022-23

## हर्षिल घाटी का भौगोलिक अध्ययन व विवेचना

Submitted by

Name Sunita Bhatt

Class BA III year

Roll No. 30

Subject भूगोल प्रयोगात्मक

Submitted to

Dr. Deepak Singh

# :– अध्ययन का मुख्य उद्देश्य :–

किसी भी सर्वेक्षण शोध को करने से पूर्व उसका उद्देश्य निर्धारित कर लेना आवश्यक होता है। क्योंकि इससे अध्ययन की एक श्रृंखला बनी रहती है । और उद्देश्य को प्राप्त करने में आसानी रहती है । हमारे अध्ययन का उद्देश्य सर्वेक्षित ग्रामों की कुल जनसंख्या का लिंगानुपात साक्षरता एवं प्रवास का विश्लेषण करना है , तथा प्रवास से इस क्षेत्र का सामाजिक आर्थिक जीवन इस प्रकार प्रभावित होता है । अध्ययन से यह देखने को मिला की हर्षिल घाटी में जिन ग्रामों में सिंचाई के साधन एवं आवागमन के साधनों की उपलब्धता थी उन ग्रामों में प्रवास कम देखने को मिलता है । प्रवास एक गतिशील किया है, ग्रामों के लोग अपने आवश्यकता अनुसार ग्रामों से बाहर आते रहते है ।

## हर्षिल की लोकप्रियता-

हर्षिल की सुन्दरता को अपने जमाने के लोकप्रिय चलचित्र राम तेरी गंगा मैली में भी दिखाया जा चुका है। बॉलीवुड के सबसे बड़े शोमैन रहे राज कपूर एक बार जब गंगोत्री घूमने आए थे तो हरसिल की सुन्दरता से मन्त्रमुग्ध होकर यहां की घाटियों पर एक चलचित्र ही बना डाला - राम तेरी गंगा मैली। इस चलचित्र में हरसिल की घाटियों को जिस सजीवता से दिखाया गया है वो देखते ही बनता है। यहीं के एक झरने में चलचित्र की नायिका मन्दाकिनी को नहाते हुए दिखाया गया है। तब से इस झरने का नाम मन्दाकिनी झरना पड़ गया।

इस घाटी से इतिहास के रोचक पहलू भी जुडे हैं। एक अंग्रेज़ थे, फेडरिक विल्सन जो ईस्ट इंडिया कंपनी में कर्मचारी थे। वह थे तो इंग्लैंड वासी लेकिन एक बार जब वह मसूरी घूमने आए तो हरसिल की घाटियों में पहुंच गए। उन्हें यह स्थान इतना भाया कि उन्होंने सरकारी नौकरी तक छोड़ दी और यहीं बसने का मन बना लिया। स्थानीय लोगों के साथ वह शीघ्र ही घुल-मिल गए और गढ़वाली बोली भी सीख ली। उन्होंने अपने रहने के लिए यहां एक बंगला भी बनाया। निकट के मुखबा ग्राम कि एक लड़की से उन्होंने विवाह भी किया। विल्सन ने यहां पर इंग्लैंड से सेब के पौधे मंगावाकर लगाए जो खूब फले-फूले। आज भी यहां सेब की एक प्रजाति विल्सन के नाम से प्रसिद्ध है।

हर्षिल घाटी का दृश्य